मधुलामनद्राविशः कर्दंशाव्रणिक्याग्रस्रणोरुमिश्रविशायमनिका
यकेवलद्वाप्राथ्यिकुवचमश्रीः।अस्थिकाथमलायका छिन्द्यात्यान
नाशयेत्।यथवद्वेमद्राक्षेभेवजसहाहिविश्वरा।समाधिनाथसीसिक
ववंवासेक्रयद्वाणी।णीवाधंगधपूजामधयाधंगाथेवचयिकाचप्लेवनवा
छिन्द्याद्धुशिश्वानयकाचयेत्।अथवज्रध्वानाकाश्चूर्णासमूलाहरेत्।।

ॐ शून्यतासमवज्रस्वभावात्मकोऽहं। ॐ एकजावज्रस्वभावात्मकोऽहं॥ ॐ धर्मधेषु
स्वभावात्मकोऽहं॥ ज्ञ्रथदामं प्रवक्ष्यामि शमकिकादियरुक्षणं शयनासनसि
द्धिः स्याद्यद्यद्यकर्मप्रसाधनी। शमकिकं शमकिचिलन योषिकं पुष्टिकर्म।
वश्यो लोकश्चिलन डाकिनमुद्रावशी। शमकिकं मक्तोकर्षिवाया का
वन्धयोषिकं। वश्यवाह्यवज्रावेशस्वभावमानं। इस यामकुरुवे

लगे लाक्षिगण्ड कुचकचपीयूषरागवमानीयगलेवस्त्रकायगुणगस्त्रवभग
शिशिवचनिकवाधिकगरयविनतशीलसमकन्धरूपारूढरूपं स्त्रिचीकु
योग। यथागुणाकृष्णधिष्ठयगवक्रमत्वसाथां शवचन्द्रांशुनिर्मली
क्षानाम्नायुयोगेणवलिनियाश्रेयतगश्चयमाविद्यधनामकीजाधन
गृहीतयागाङ्गगलस्कान्स्त्रयिलाधिक्यलानां कृतिजङ्गगान

विद्याग्रलक्षया ज्ञानवद्भ्रान्तीयमानंचिन्तयन् गगःश्रीवृद्धीःविहरा
नन्दःकुंदइन्दुसंयविवानसाकंयशोजननमक्षणसुहसाकमि
दमवोचोगजासनंसबालवजाजनीकवलानीययुद्धवावस्कय
नमिवमक्षणडयद्रगजासनंचवविरोठिनंदक्षिणगदोवद्रभवंव
भगंखकोस्कंधनंगरोवबामतोनाडिहरयावस्कय यनस्कनवद्र
णमुद्धावकुंडवगवाकनंनागयाशकुंपश्चिमयावस्कय यलस्कनं

मूयाणावज्रमुद्रालयन्त्रशासनीलंबालयन भोक्त्रयादिनापस्वाहरि
मंत्रैविक्षोभणार्थंस्वस्वसाम जष्टविधस्वसमक्षेयाऽनुगुणार्थं मन्त्र शक्ति
रुद्रशक्तिरुद्रैविमर्दयेण ॥ ॐजाःमुचिरुद्रनाथिसाधकस्यायिपश्चायाः
मणिरुद्रावसर्वसत्वार्थसिद्धिर्भवोम्यनुगा। गच्छस्वच्छविषयंपूर्तवागै
मनायस्व॥ ॥सङ्गथागणकोयवाश्रीलवज्रचक्रयमाविगमुवेलिपरलः॥

ॐ ध्रुवबल रुगवज्र सर्व्वगथ गणा रुगवज्रं मरुवज्रा सर्व्वं ध्रुवं किस्म॥ मारुवज्रा स्वरा
वर्त्तं यमाचिवलि रीषणः सर्व्वे वृक्षमयः गास्त्रं कायवज्रा नामास्तुग॥ पिशुनवज्रा
स्वरावर्त्तं यमाचिवलि रीषणः चिरुवज्रा युगी काणा वनवज्रा नमास्तुग॥ वा
गवज्रा स्वरावर्त्तं यागयम्मा कानन्तमः सर्व्वा पवना गाग्र वाग्वज्रा नमास्तु
ग॥ ॐ ध्या वज्रा स्वरावर्त्तं यमाचिः सर्व्वे कर्म्मिकः कायवज्रा युगी काणः व
ज्रणालि नमास्तुग॥ सर्व्व वृक्ष स्वरावर्त्तं सर्व्व वृक्षैक संगरुः सर्व्व वृक्ष वज्रा

गावीजाः गानि पृष्ठि वशा रुद्रागः॥ ॥सर्व्वेगथ्सगगकासवाङ्गि फ वक्त्र
यमानि गन्धर्व्वजावली कानां नामाश्विथकायठलः॥ ॥क्षयणाका अग
क्ष सर्व्वेक्षयकार्य्यकारः। मक्ष्यमानि सफ्रूयं रुगवगा कप्यादगं॥ मांसका
कंगगदुक्ष सर्व्वेमांसकार्य्यकारः। मांक्ष्यमानि सफ्रूयं रुगवगा कप्यादगं।
पिंशुनाजानं गगदुक्ष सर्व्वेपिंशुनकार्य्यकारः। पिंशुनयमानि सफ्रूयं

रुगवणा कप्पायदणं ॥ वागा वा कंठगा दुक्ख सव्वा रसं संवाणं वा समं
त्ति सरूयं रुगवणा कप्पायदणं । क्लोमा वा कंठगा दुक्ख सव्व व्यणं कंठवद
शब्दीयायमा त्ति सरूयं रुगवणा कप्पायदणं । मेदो वहि कापा खावाद
वणणा यथा मेदिगा सव्वणी कम्मा जयक्खा णोव वणिसा आत्मा ना सव्व
गोवो ना नित्य वो रस्समणुलं । यछीगा तरुचय योगो सि द्रणना पसं
गोयः ॥ ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि व्याधिरूपमुत्तमं यमा विशाम

स्थापित्यानिधिः जिनेश्वरप्रणमनेस्वर्थः ॥ ७ ॥

॥ ॐ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स उसभस्स पढमस्स जिणस्स पढमस्स केवलिस्स पढमस्स तित्थयरस्स पढमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अजियस्स बीयस्स जिणस्स बीयस्स केवलिस्स बीयस्स तित्थयरस्स बीयस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स संभवस्स तइयस्स जिणस्स तइयस्स केवलिस्स तइयस्स तित्थयरस्स तइयस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अभिनंदणस्स चउत्थस्स जिणस्स चउत्थस्स केवलिस्स चउत्थस्स तित्थयरस्स चउत्थस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सुमइस्स पंचमस्स जिणस्स पंचमस्स केवलिस्स पंचमस्स तित्थयरस्स पंचमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स पउमप्पहस्स छट्ठस्स जिणस्स छट्ठस्स केवलिस्स छट्ठस्स तित्थयरस्स छट्ठस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सुपासस्स सत्तमस्स जिणस्स सत्तमस्स केवलिस्स सत्तमस्स तित्थयरस्स सत्तमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स चंदप्पहस्स अट्ठमस्स जिणस्स अट्ठमस्स केवलिस्स अट्ठमस्स तित्थयरस्स अट्ठमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सुविहिस्स पुप्फदंतस्स नवमस्स जिणस्स नवमस्स केवलिस्स नवमस्स तित्थयरस्स नवमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सीयलस्स दसमस्स जिणस्स दसमस्स केवलिस्स दसमस्स तित्थयरस्स दसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सेज्जंसस्स एक्कारसमस्स जिणस्स एक्कारसमस्स केवलिस्स एक्कारसमस्स तित्थयरस्स एक्कारसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स वासुपुज्जस्स बारसमस्स जिणस्स बारसमस्स केवलिस्स बारसमस्स तित्थयरस्स बारसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स विमलस्स तेरसमस्स जिणस्स तेरसमस्स केवलिस्स तेरसमस्स तित्थयरस्स तेरसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अनंतस्स चउद्दसमस्स जिणस्स चउद्दसमस्स केवलिस्स चउद्दसमस्स तित्थयरस्स चउद्दसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स धम्मस्स पन्नरसमस्स जिणस्स पन्नरसमस्स केवलिस्स पन्नरसमस्स तित्थयरस्स पन्नरसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स संतिस्स सोलसमस्स जिणस्स सोलसमस्स केवलिस्स सोलसमस्स तित्थयरस्स सोलसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स कुंथुस्स सत्तरसमस्स जिणस्स सत्तरसमस्स केवलिस्स सत्तरसमस्स तित्थयरस्स सत्तरसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अरस्स अट्ठारसमस्स जिणस्स अट्ठारसमस्स केवलिस्स अट्ठारसमस्स तित्थयरस्स अट्ठारसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स मल्लिस्स एगूणवीसइमस्स जिणस्स एगूणवीसइमस्स केवलिस्स एगूणवीसइमस्स तित्थयरस्स एगूणवीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स मुणिसुव्वयस्स वीसइमस्स जिणस्स वीसइमस्स केवलिस्स वीसइमस्स तित्थयरस्स वीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स नमिस्स एक्कवीसइमस्स जिणस्स एक्कवीसइमस्स केवलिस्स एक्कवीसइमस्स तित्थयरस्स एक्कवीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अरिट्ठनेमिस्स बावीसइमस्स जिणस्स बावीसइमस्स केवलिस्स बावीसइमस्स तित्थयरस्स बावीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स पासस्स तेवीसइमस्स जिणस्स तेवीसइमस्स केवलिस्स तेवीसइमस्स तित्थयरस्स तेवीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स वीरस्स चउवीसइमस्स जिणस्स चउवीसइमस्स केवलिस्स चउवीसइमस्स तित्थयरस्स चउवीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स उसभस्स पढमस्स जिणस्स पढमस्स केवलिस्स पढमस्स तित्थयरस्स पढमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अजियस्स बीयस्स जिणस्स बीयस्स केवलिस्स बीयस्स तित्थयरस्स बीयस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स संभवस्स तइयस्स जिणस्स तइयस्स केवलिस्स तइयस्स तित्थयरस्स तइयस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अभिनंदणस्स चउत्थस्स जिणस्स चउत्थस्स केवलिस्स चउत्थस्स तित्थयरस्स चउत्थस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सुमइस्स पंचमस्स जिणस्स पंचमस्स केवलिस्स पंचमस्स तित्थयरस्स पंचमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स पउमप्पहस्स छट्ठस्स जिणस्स छट्ठस्स केवलिस्स छट्ठस्स तित्थयरस्स छट्ठस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सुपासस्स सत्तमस्स जिणस्स सत्तमस्स केवलिस्स सत्तमस्स तित्थयरस्स सत्तमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स चंदप्पहस्स अट्ठमस्स जिणस्स अट्ठमस्स केवलिस्स अट्ठमस्स तित्थयरस्स अट्ठमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सुविहिस्स पुप्फदंतस्स नवमस्स जिणस्स नवमस्स केवलिस्स नवमस्स तित्थयरस्स नवमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सीयलस्स दसमस्स जिणस्स दसमस्स केवलिस्स दसमस्स तित्थयरस्स दसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स सेज्जंसस्स एक्कारसमस्स जिणस्स एक्कारसमस्स केवलिस्स एक्कारसमस्स तित्थयरस्स एक्कारसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स वासुपुज्जस्स बारसमस्स जिणस्स बारसमस्स केवलिस्स बारसमस्स तित्थयरस्स बारसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स विमलस्स तेरसमस्स जिणस्स तेरसमस्स केवलिस्स तेरसमस्स तित्थयरस्स तेरसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अनंतस्स चउद्दसमस्स जिणस्स चउद्दसमस्स केवलिस्स चउद्दसमस्स तित्थयरस्स चउद्दसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स धम्मस्स पन्नरसमस्स जिणस्स पन्नरसमस्स केवलिस्स पन्नरसमस्स तित्थयरस्स पन्नरसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स संतिस्स सोलसमस्स जिणस्स सोलसमस्स केवलिस्स सोलसमस्स तित्थयरस्स सोलसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स कुंथुस्स सत्तरसमस्स जिणस्स सत्तरसमस्स केवलिस्स सत्तरसमस्स तित्थयरस्स सत्तरसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अरस्स अट्ठारसमस्स जिणस्स अट्ठारसमस्स केवलिस्स अट्ठारसमस्स तित्थयरस्स अट्ठारसमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स मल्लिस्स एगूणवीसइमस्स जिणस्स एगूणवीसइमस्स केवलिस्स एगूणवीसइमस्स तित्थयरस्स एगूणवीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स मुणिसुव्वयस्स वीसइमस्स जिणस्स वीसइमस्स केवलिस्स वीसइमस्स तित्थयरस्स वीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स नमिस्स एक्कवीसइमस्स जिणस्स एक्कवीसइमस्स केवलिस्स एक्कवीसइमस्स तित्थयरस्स एक्कवीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स अरिट्ठनेमिस्स बावीसइमस्स जिणस्स बावीसइमस्स केवलिस्स बावीसइमस्स तित्थयरस्स बावीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स पासस्स तेवीसइमस्स जिणस्स तेवीसइमस्स केवलिस्स तेवीसइमस्स तित्थयरस्स तेवीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥ ॐ नमो भगवओ अरिहंतस्स वीरस्स चउवीसइमस्स जिणस्स चउवीसइमस्स केवलिस्स चउवीसइमस्स तित्थयरस्स चउवीसइमस्स धम्मवरचक्कवट्टिस्स ॥

कारणं तां मंत्रीयां गां वंकावान लावनादि स्वयान चिन्हयण । नगद्धगंधक व
यविणगानि समुद्रनानिविनशुमा मूलयोगानि वीजाक्षेवचिंतानि क
१ हासमयद्यानिगत्यसुराजनयशवकपविकुकांचछ्रावणेक्षत्वात्वाग
त्यिक्षवचूर्णं जंकानंडचन्द्रमणुलंगास्यायविसिगद्धकायाहर्वं वज्रद
ंडगद्धीजाक्षिगंयष्ठण । गत्यनयसुराजनाग जंधश्चूर्णकायांडजा

कृष्णमार्गणाय वक्रदंष्ट्रायसमाकृष्टायसुकृपयासनायकालरात्रयेमांय
ह्रन्दंवलिंगृह्णगृह्णविघ्नंछलछलयडम्भोन्निवारयनिवारय
ग्रासयग्रासयत्रासयत्रासयक्षिंक्षिंक्षिंक्षिंनाशयनाशय
क्षोभयक्षोभयक्षुदक्षुदरयदरयहूंहूंहूंस्वाहा॥पश्चात्खंड
नवाचयत्॥ॐनृंहायनमःक्ष्मीं१यमायनमःक्ष्मीं१वनृंहायनमः

विः कवचाय नमः ॐ ह्रूं स्त्रवायनमः ४ ॥ जुम्प्रेयनमः ५ ॥ निमग्य नम
ः ६ नावायनमः ७ ॥ चन्द्रोयनमः ८ ॥ जकोयनमः ९ ॥ ब्रह्मणेनमः १०
रुद्रावसूक्ष्मायेनमः ११ रुद्रावसविष्ठिणेनमः १२ ॥ सर्व्वरणायनमः १३ ॥
हौं हौं हौं ॐ ॐ सं सं सं ॥ यथाग्रयुग्यधृपिवेव ग्रादित्यस्यग्रा
ग्रामधूसाधकोशिघ्रसन्नाः सर्व्वनसोखोदनोछ्यरागंकुवन्निगणस्यनस्तु

अंगी हारावां पुनः स्मरेत्। ॐ त्वामुत्तिकामिप्रः यूष्ठो द्वादशी
धा तश्चान्न ॥ मंत्रि खविधिना यावत्। न्यस्त मन्त्रालि सर्वाः न्यस्त
मन्त्रालि सिद्धानि कोऽहं द्वादशदेवता॥ सिध्यन्तु मंत्र निः जंघे स
ला यैं सर्वत्रावर्मं। यमराजा सदा भय यमदातृणां दय यमदया
नित्या क्षय यक्षयश्च निरामय॥ यमधो स्कन्धस्त्यवै दक्षिणमैं
शवज्रायौ। मकारंपञ्चमंत्रि खडक्षत्र दक्षेवर्मं॥ सा धो स्मनामसमा

यश्च न्यासविधिलिखनम्। ह्रूँ ह्रीं विदर्भितं कृत्वा सर्वकार्येषु साधकम्। यश्च
नित्यं गायत्रीं जपेत्। ॐ गणादिवाक्षगः वामभागाग्रसंस्थितं वामभागे तिष्ठन्तं
साधनं गणीयपुस्तकपुरगं वामकरविधृतकाष्ठवर्तिलिखनं। पूर्वगणपतिवत्सर्वं
ह्रीं ॐ गणादिमन्त्रकः गदनकविधृतकाष्ठवर्तिं अष्टकाष्ठवर्तीं लिखनं। सर्वं
नमस्यं डाप्यं बलिकरविघ्नस्य नाशिकरपृष्ठिकरं ॐ गणाधिपतये नमः
दिवाम्नोदरगः। पूर्णवादिनभोकाशं अष्टकरस्थासपं ह्रीं ॐ गणपतये

श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथनक्रयमविष्कलिखते॥ ॥

ॐनमःनक्रयमाय॥ ॥अथवक्ष्येगोपाल्यास्यस्थनवाजदंशचिकित्सनक्रियाम्।
यत्वाविघ्नशमनसिद्ध्यर्थंवाऽस्यैतत्प्रथमस्थपनकार्ये श्रीगणपतिस्मरणम्॥नक्रयु
क्तंयमंचस्मरेद्यागविघ्नसमाप्त्यसिद्ध्यर्थंवीणि अपवर्गवर्णेत्यं॥ऽस्यैवमस्मरे
द्यत्वा गणयन्त्सर्वपनरु ऽमिरु तिनमंत्रेणस्थापनरुडीगायदि॥सोऽस्यैवमस्मरेद्यत्वा

याण कर्मक्षेमाद्यनमरी॥ ॥ सर्वेगाथमरणवायवा क्षिण्वज्ञानकायमा
विगत्कृतमविधिपज्ञ॥ ॥ त्रुर्यागयुक्तवान् यागी नानाखाथरो
ग्र्याणपय लज्ञा क्रिसेयुक्तगंधमान्यवि लाप्तव्य ब्रूवीवमक्षयधमाध्य
पताया दिलिम्सेयु ब्रूवा दिगर्यवमरा स्थिरावयम। ग्रयगावनिःकाय
त्रपि। वे त्र क्ष लोकक्षमाणादवास दिगा ग्रहनिर्यथन्तारसमयकवा
धर्मसंस्कापगन्यरास्त्रयोक्षणरावनामावरुण। खधमोरावयत्तप्र

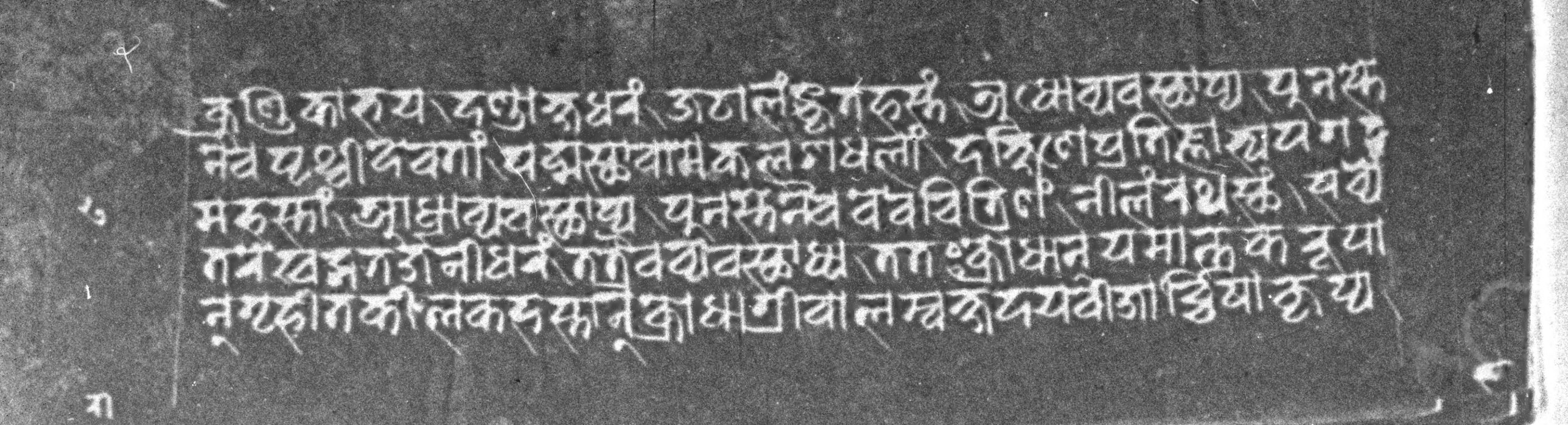

चिन्मात्रमात्मानमुपादिशद्यथा स्फुरन्तमुक्षाणमनीनिषाश्रयाद्यपि यूथं
यवसादीक्षयथा रिपोर्यमान्कक्षमकुण्ठदक्षधादिशद्गुणावमे
नादिकैदवायश्चाद्यत्ययात्यक्षमेण साधनक्रमणपूर्वं निषाद्य
त्रिगहनारिनीमन्कायूनस्कांजिक्षुथागंविविन्यायश्चादमंरिशो
कायण।जूननमक्षण॥डैवक्कुडायवक्कडजयम्खायवक्कगवीनायक्कुडायन

द्विजपाणिपंथयामशुणेवृद्धान् पृदाय्यविर्वकिंगः॥ ॥स्वेगथगादायवा
द्विरुवजानवकाय्यमाविगवंमकामशुत्लयज्लः॥ ॥ अथखलरुगवंकःस
द्वेगथगारुगवंकसद्वेगथगाक्षिपणिंमरुवज्रधृत् अनवकोसंयाऽजना
ज्ञायमासंदंमडापयागवुधनगुप्यन्ति वजिनःमंडगावजामंऽप
सिद्धिवृवंनिरुयसी॰॥ अथवऽधंयाजाऽवंऽस्वचनमुडाऽधग स्सु
यांमाशुत्लयानां यमघ्रंलिवेसिरावधग। मशुत्लंवलेंथन्विगं निंयऽ।

मनसूच्यग्र। सम्यानुसाधयनिलं सच्चत्रांग्रुच्यग्रगः। प्रथमेमोलि
मथान द्वितीयंवज्रमोदग्र। तृतीयं वज्रघंटश्च चतुर्थंविघ्नयक्षणं॥
यत्वाय गमनसवाय्यक्रस्यमखनिर्नगाः। नगत्सकयुगवन वाधि
लक्षाजिनोत्मः॥ अथमंत्रं प्रवक्ष्यामि सच्चरणवनिः क्रियांऽङ्गा
विगमनामत्र सच्चं रक्षयेवाम्य नं॥ क्रीः ख्रा दिमत्रवीरश्च खाद्य
क्षनिया ज्यग्र कृत्वा मंत्रुलीकां ग्रसां विमूग्रगायमिश्रिः॥ अवगोप्रीत्य

रक्तचन्दनचक्रनखवालनविलेपनधनुष्टङ्कारविषु ऋनवाक्षि
नागरदीपथा। गक्रिकाशमकचु योषिकेक्षाधिकंपथावण्याढ्
धोयच्छविंशति अरिंदचतुःयष्टिकं गुडिकाप्रकथनमंत्री गतांढ्
मन्त्रसाधन। सद्योगंसालिकानाचु ग्रक्तमत्रद्वयंपथा। गढ्ढे न्यास्ट्रम
क्रिकं मक्षमोयाचु योषिकंवण्याढ्षिदनोमिकामां कनिष्ठायाचु
निग्रढ्। गक्रिकसिताबर्हचु यामवक्रेचुयोषिकं। वकेवण्यस्तक्षी

वक्षवर्तुयोगं निधिस्कं वीजपूरकं नकुलीरुकं ऊरुवयवस्कंयो
नेवजोनि नंजुकं मकरस्कं दक्षिणेऊरुमालायन्नु धनं वाम
मूलकमादर्कं गेनेव ज्ञानंजुवृषभस्कंऊरुवयवं त्रिशूलक
यालेयाणि जूलिंगिराहुस्कंद्वयं गोनिकं उशन्यांवयवस्कंयो
नस्कनवजूनिं चक्रवाकस्कंऊरुमालाकमंडलुरुकं जाप्यस्त्री

यवस्कृत्य यूनस्कनेवाभ्रुसंभवादूरं वर्फेकंयाढयाणि नीलसनाय॥
पंकुद्धं नेअर्थांयवस्कृत्य यूनस्कनेववार्यं धूसवभ्रू यीगदविनसंकं व
गयंटधवेवायथांयवस्कृत्य यूनस्कनेवशानं वर्फेकस्कद्वयनयस्कधवं॥
सस्कखुगसंकं डङ्कंयवस्कृत्य यूनस्कनेवचद्धेष्ठवं कस्कद्वयु॥
नक्रमूकथसंकं डङ्कंयवस्कृत्य यूनस्कनेवब्रह्मा सं जीवंयवुमस्व

ग्रथ्रुमथुलगनमस्तुगा।वज्रवज्रवज्रप्रोज्र वज्रघ्राणवज्रजिह्वा वज्रकायवज्रलि
ङ्गः॥ ॥ॐ यादरागवान्वज्रचक्रनाथश्चिन्तनसमयः॥ ॥अथमगःसं
यवक्ष्मि यमाचैवोत्तमथुलो।यमानिष्ठगीकागःसर्वकामार्थसाधकः॥
नवनसनिर्युक्तनसूयमाणनगाद्रणा सूर्णसूगयन्याक्षयम घ्रस्थिम
थुलो। सर्वेन्द्रियसंपूर्णः सर्वेनथविनाशकः। भाक्तिकाचिथलगार्व
मथुलमथुलाद्रगिभाकर्मवर्जितखलयथवद्वा समकागः गस्यम(थ्रा

लिखद्वयं वज्रमालासमावृतं॥ पूर्वदलं लिखद्वयं वज्रमालिसमावृतं द
क्षिणं लिखद्वयं वज्रमालासमावृतं। पश्चिमं लिखद्वयं पद्मनाग
गिरौ। उत्तरं लिखद्वयं खड्गं मघवभूसमन्वितं॥ पूर्वकालिखद्वयं
दक्षिणवृत्तिं लिखद्वयं। पश्चिमं लिखद्वयं सवज्रविकाननं। उत्तरं
लिखद्वयं पंचवज्रिसमावृतं॥ मूलं पूर्वेणाद्याय वज्रमुद्रां दक्षिणे
पंकजं पश्चिमाय खड्गं खड्गं उत्तरे। निष्पन्नमुक्तं कृत्वा पूजां कुर्यात्

रक्तसंसारितत्व

42-49

पस्त्वे अथ पाठमारभ्यते ॥ अथाऽतः संप्रवक्ष्यामि उत्तरतंत्रप्रदक्षि
णीकृत्य शास्त्रमेवसिद्ध्यर्थं सर्वकर्मणां निपातायनिर्याणिर्थं
कर्मानि वृषणौ शुल्लं यशोधामकिमर्थं पृष्ठवास्थि यथा अन्नी
नयो अंशु वस्त्रनानाविधेव पृष्ठ्वाचादृमन्यरु पाठस्थो
क्षणयंचार्थगोधेवा खड्गरत्नक्षेव प्रयाऽनुयवयो ॥
सर्वेनथगुणायवाधिकनकयमानिमंस्त्रीयसाधनपत्त

कर्म्मणा स्वश्रुताप्तावधिवर्त वशपाणालथागवाव॥ ॥अथाष्टसंख्य
ग्रामि सपिंडागस्यमशुल्क स्वयवर्वीप्सिछथै पनमाछ्य प्रसाध्या
द्विजुगामेवावद्वाछु ग्रामवभूरुत्यानवो स्त्यापिनिसमाग्रमछ्यसूत्र
सगोकर्ण यज्ञिनासमृद्धिछु वामणोनेकपालको॥ ॥छे छे छे सी
सी॥नगर्भ रंजयन्याछ्यः पनमा थपसिछ्या॥ पूर्व्व नवडावी श्रीयाग्र द
द्विलव युवगमा॥यज्ञिम सपिंडागछु पनमा ग्रामएत्रनमग॥ अथिणा

२६

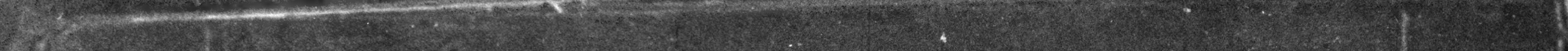

पुनः पुनर्यावन्नीलं वर्णस्थानं प्रयाति तावद्यष्टिप्रवर्तिनी या
वर्णोद्वर्तनयष्टिः वर्णाभ्यासस्य यावत्संख्या गणनं पुस्तकसमाप्ते वर्णमाला
रूपनाथ अभिनवमञ्जुश्रीकल्पे धर्मसंग्रहयाग एकाक्षरीयाभ्युदयाभिचारेक
र्मसु समादाय यावद्भस्मसात्करोति कल्पसूत्रलिपिकल्पसमाप्तौ
क्षरगणं संप्रवक्ष्यामि तथैव विनियोगतः [illegible] यावत्कल्पसमाप्त
तीमान्तं [illegible]मासं ऊर्णिकिकादिभिः [illegible]

× सटिकाष्टि : ×

वायश्च वायौ समाधिं समापद्य स्वस्वरूपावायौ समाधिं समापद्य लोप्यो
वायौ समाधिं समापद्य पृथ्वीगगनदानयासश्च। ॐ ॐ वक्रयमाधि ॐ
वृवाकोसव ॐ असवाव ॐ ॐ अधेक्षि विरामिॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ये पवनं वायेऽसान्तम ॐ पयान्ते ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ
ॐ ॐ

काऊँवृद्धजाकिनी ऊँवज्रजाकिनी ऊँकर्मेजाकिनि ऊँपद्मजाकिनि
लांमांमोंवांक्षांलां ऊँमन्त्रऊँपद्मऊँपुष्पऊँधूपऊँदीप ऊँगन्ध
व्याऊरागवानवजीवज्रोजाकिनीसाधनसुवाकुवणसिद्धयेसर्वय
ज्ञजाकिनीगच्छसाधानिमकुरुयेनिराविघ्नंऊँजाकाणवज्र
जाकिनीस्वाहा॥ ॥ जूथानंप्रवक्ष्यामि वज्रयोगात्साधनं यः

ओं स्यसाधनं जीः वानमहामन्त्रमहामक्रियवाक्यं युगाखिलद्यसंपूर्णं रु
स्माङ्गलिंगविग्रहं स्मरनृपद्वंगाठंग समाक्रान्तस्माणन्तं॥ ॥अथमा
ःसंप्रवक्ष्यामि कार्त्तिकाः यसाधनं विद्यागाननमहामन्त्रं ह्रीं वानसंप्र
वेसपठः॥ ॐवि द्यागानन ह्रूं ज्ञाः ह्रीः ह्रूं ह्रूं हः हः ह्राः हः स्वाहा॥ ॥
समयसाधनमणावाक्यासर्व्वकार्य्यसिद्धयामन्त्रखिन्तस्माज्ञानिवर्ध
स्वयंभूंमहामान्मदयंश्रवगर्ज्यंवविजयंठः॥ ॥गानपंक्रंक्रीं वेवत्व

राष्ट्रबाधाभवत्वासन्नोत्तनवासभ निन्दी मिश्रनयाकार्यः। सगमान्य
ग्रागन्मद्य अस्यात्यक्षमाणगः नाचनासिन्धवानश्च वित्तमङ्गणथेवच। ॥
ग्रावाद्दृश्यं साद्वैनवानवायत्रसनवा अननाव्यिगगाय पाणवमरा
वज्रामगंमथाभवयागवतःग्रह्य स्वच्छ्रुसमपानवृग्रा ॥ ७ ॥
सद्वाग्रथमगवाप्यवाधिरुवज्रानवयमाग्निगत्वयासमयसाधनयज्ञश्च।
॥ ॥ग्रथरुगवान्मरुग्रपृग्रसमयवधिवा वानासमाधिसमाणश्चवज्र

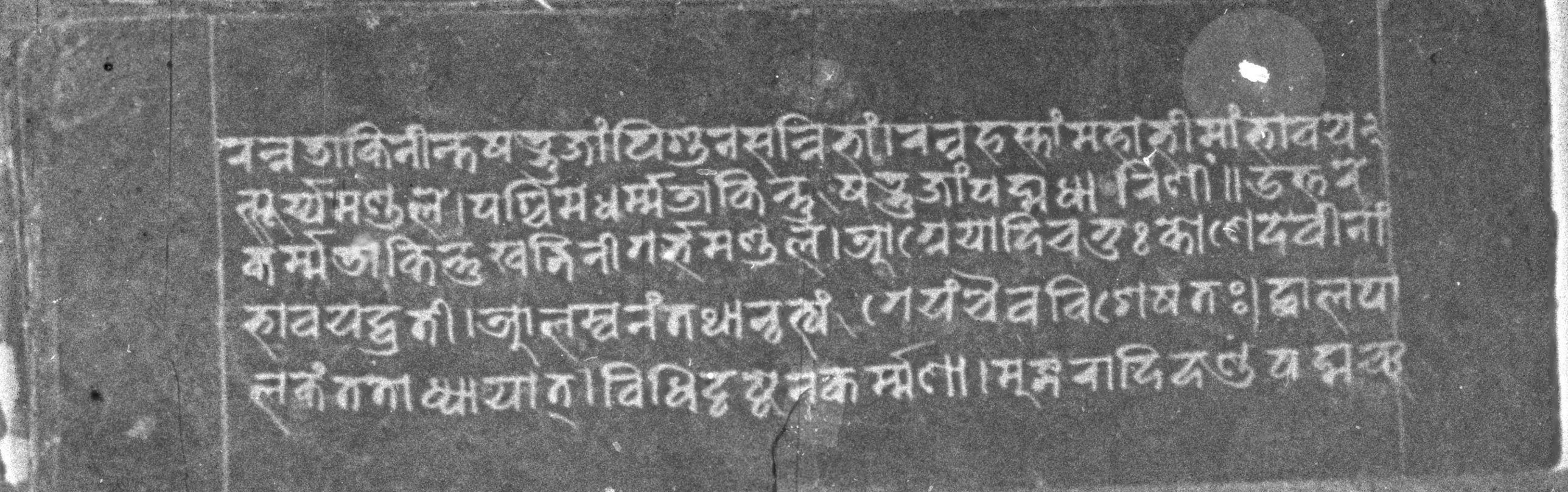

यिता मशब्दयं मानापंरि स्फुटा नं। निर्दछ शब्दवणः स्याद्ध
ब्दयष्टिकां वद्धाप्त समायुक्तं गीतवाद्यादिनाद्यके शब्दस्याद्ध
नकथा तथा ब्दूलयि तानद्धस्तान्मरुद्धामथा मालयत्कं।
गदद्धनयजाद्ध मिमद्धुनस्तुं गथवद्धिशब्दमंशाद्धदयं।
खचायथा स्मनश्चक्रं सम्द्राप्त्यथयत्कं शसमयाद्धनजीवमंशु

व्रणस्य कार्यवाश्विलसिद्धार्थमदाम्बीप्रदलेषु आवृष्यमधिमाक्रमं सर्षे
नारुचलं दत्वा अथावद्यच्छुरावयुक्तं पिंगलेकार्ये ऽङ्गेव्रणं वि
लेपणः लिवकार्याये संवेष्ट्यमलोपि क्लमावरण। जीःष्ठादि सक्त्म
ज्ञाय्यं वज्रदंडु समत्वस्थग। सिंहनादगणःकार्यं वक्रयमाविषयोग
गृहाविक्षि त्सामान्यमोसाऽ ब्रिज्यानगतविलग्नाधाश्च सरुगंका
र्यं ग्रहवादि पगायनं। ध्वजंवीथागणा दृष्ट्वा जीवंगप्रसाधयग। जीव्रा

स्यासंवाचिकन मरुमुड साधयण वावाडी दूपमा धेय कम्पन सर्व यावि
णश सिरुवछिवन शाग सर्वकामाथ साधयश ॥ ॥ ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं
मि जगवश प्रसाधन नको यन मरुमन्द आपंगस्य विनिद्धि लाग स्त्री का
नवीशस्य मस्थिाननविशवयण वजमशुल समावृद मस्थिस्था
पनिशवयण थक्क विशुविविध के जय नानास्वरूपि नश युक्तानी श
वयशीमी मस्थिाननसाधन ॥ ॥ ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं मि वज्र

॥ अथ सद्वेसत्वसमानानिष्ठकनाथेनकर्त्तवाणाद्य
विनाशार्थं लोचनसौगतानागणप्रकल्पनवान्तव्य द्विउंय
वारावविकल्पनासानन्यप्रश्नलिंगिशून्यगावतृणाद्विनयागम्
मुष्ठनागविघ्ननाशकरणिपादनाय गणाद्धम्मुमालपश्चगेद
कस्थयुमानविकल्पण कतृणास्वर्वं प्रणालिरपदंपेक्षउक
प्रतिपादनायदवावासरूपेयुमाद्रिमगनकरसत्सायनास्वा

माष राजनाथागा खगेधमगुर्कपनिद्रासिग॥ ॥सर्वेगर्थागगकाम्यवाछि
नकल्पमाणिगसिद्धिनिर्द्रेयःपल्लश॥ ॥गणर्दस्यपागनयमस्तमय
ऊकायास्वसद्वेयम्मोलामाग्यन्तर्पनत्वाशिषेवाग्यतेत्वाश्रीयमानम
वृणेगशक्तनस्यधत्राणर्पागयेत्समाग्रिगः॥ गणर्दमरामशुलसवग
समग्रगःङ्कआंःह्रींमणुलद्विउनगादीर्घस्वायविजागियागेकं॥ ॥

लिङ्गसूत्रयद्वयप्रकल्पितशास्त्रदेसशवज्रार्थनासमयशाज्ञा
वृद्धसशवाद्योजशाधर्म्मगतप्रशुश्रदहिमसमयंगवं वाधिचि
ल्लक्षदहिमागशदेसशरुग्विग्रहसमयवज्रपृथिवावाहनो
वंदवीयश्चिरुगासि सर्ववज्रज्ञानुताधित्तां वर्यानयविंशधयं रु
तयानमिगासूचामण्डलस्यासूसमरागंद्वावेहूर्यसशत्मरिशावउ

दैवानवीक्षसंस्तं प्राणक्षसस्मिंसदा सूध्रिपश्रुकपालानि पंच व
ह्यप्यागणाश्रुश्रोस्मकरध्मत्वा स्रुकाभ्यांविराजयणाधर्मवक्रीलि
यपूर्व वहवाभिरुद्धिलोपश्रुवामलरापश्राश्रुक्षस्रुवाप्नि
शाननादृपाविनाशिनाः सर्वरत्नगरुधिणाःचुगस्रुथानूनपात्थ
सर्वमासपशविवाशोधर्मवक्रीणथन्यसंविकामालकाल्यपादर्श

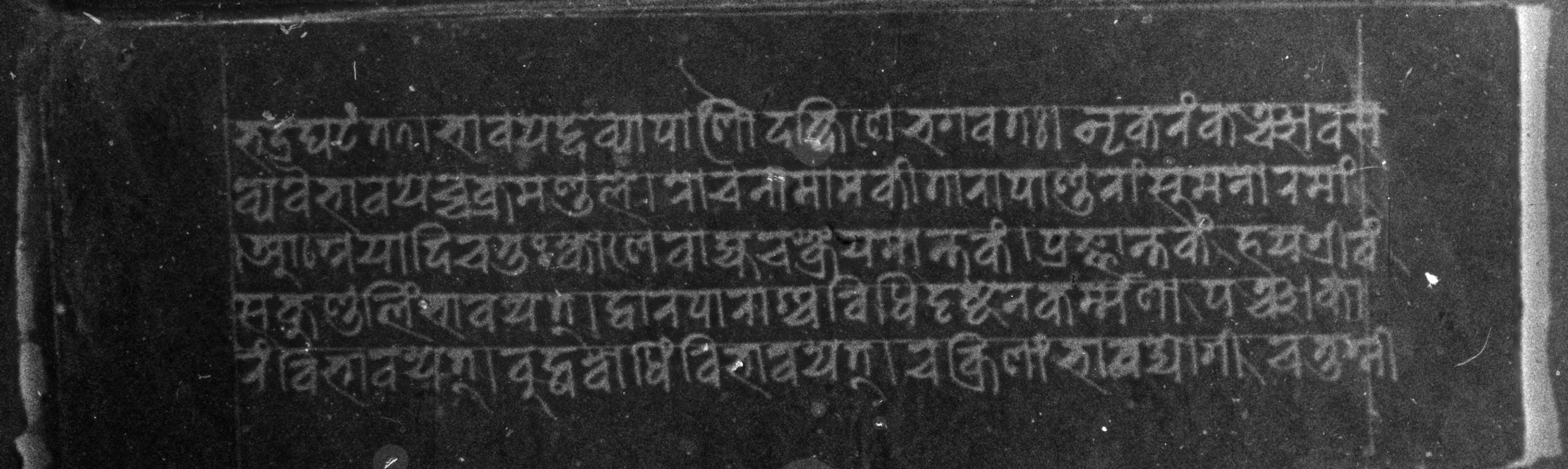

नाम्निगऊपपवायणीकृयोत्सवा गीपशुमेयुत्वंधीयविनीकमूणेवधि
रुग्रहासमयद्वानिवेप्रस्य यमनिरकंयुद्धरकश्रजिघ्वधीगि
पविपच्चनीप्या ॥ ज्ञथरुगवनःसर्वेगथगामसपरमानन्दपिणावज
सत्वस्यवचनमूपश्रुत्यहृष्टरोमाश्रुकलाकुलयामासुश्चयमार्य्यकानि
यन्तुनिकपालानीवगमरुगासमयानानिनानिरक्षोनरविधगिश्च

शधर्म्मेमहाराजकुवरस्यानवं

मरासीसाद सकणिः अूरासविस्मयमिदं प्रदर्शंगमुर्णरवमानवाधि
नारिसमया नरावानखरावना नभेषु नेचविक्षनं अवाग्समगात
यो अूवागमिवेना समभवधर्मेसरखो नयाथिनापेशानवाय नेक
गासनो वजस्वप्रयाणनडत्यादर्शंपणिष्ठिगश सद्वरावानव समया
आदिमधमनकवङ्गिगश अूथरुगवगामरायश्चिकाथा छदमूधानया

यपनंगमग्र चन्द्रार्कौगणिरुक्षत्रारुणाविद्ध्यागगणः संक्रान्तिपदमान्ताश्चवा
युवारुनयागगणः भूविष्टि मार्गकृत्वा संक्रान्तिविधिलक्षवाः स्वक्ष्याः
योगविन्धे याथष्टसंवत्सरवा। भूपानंगुतभडाके पक्षानारोसूमान्त
ग। रुक्षं०गणेयानं प्राणनश्चेद्विनिन्नमग ॥ ॥ सर्वेगथगगकोमवा
द्विरुवक्रयमाविगक्षणपूरपवाश्चयत्नश्चमाफा॥ ॥शुरुः॥ ॥

प्रबधना वश्यं वाक्षमिमंत्रण कानाभिमंत्रधा सर्वो सिंधवमानाचु यमंत्रेण
छिरावयण सुपाखगमुखान्के वजानंग विरावयण जीवाचमनु सरणी
विस्फ्रन्कसमन्नाः काक्षिणा विकलांधमत्वा वपमानमंत्रान्मकोपाक्ष्या
ःपणिमा छेव वकावस्वपनावणी मंत्रवेजपेत्र ऊंकारस्वरुपिणीस्वा
हाकारंगाढ्याण जीवाचमन मंत्रनां भूमुवीसयंगीरवपुरावयण मं

यत्वया सत्यप्रज्ञाक्षुष्ठोपि मस्यामास्मन्यया॥ अथ्यो नावमन्यो
स्यामश्नतो व्रयम्॥ ब्राह्मणोथ्यो पद्मं नेवप्रकाश्यम्॥ मे पवि
ऊं सर्वस्व नवेयाश्च कदाचन वाधि विंन वक्ष्यम्॥ स्वपनधेर्म
नश्यम्॥ अथविपि सत्वमुक्षं नेवप्रकाश्यम्॥ आत्मस्कथं
नविनिन्दे॥ रागवक्ष्मि नश्यम्॥ ऽ वृमेसदा याश्च धेर्म

नेवप्रमानन्यप्रा ग्राङ्गस्त्वीनवेवश्च समयानीसवनंसदासीनीप्रक्ष
स्वरावानी हृयनाद्धावनवद्या शिर्षी नेवप्रमाघाणी यागेमवविवे
ज्ञेयप्रा ज्ञयन्मनु सयानिणी समयादीनसवयन्त्सयाप्रुयाज्ञरागथस्
मथप्रमदाघदिग्रायंगा गयावेमण्डलीवर्ल्ण समगयादाप्रदृगेनाप्री
द्वीगुनी समयणालवामप्रगवं कपा स्त्रीणी सयानधामविशीनवि ी धी

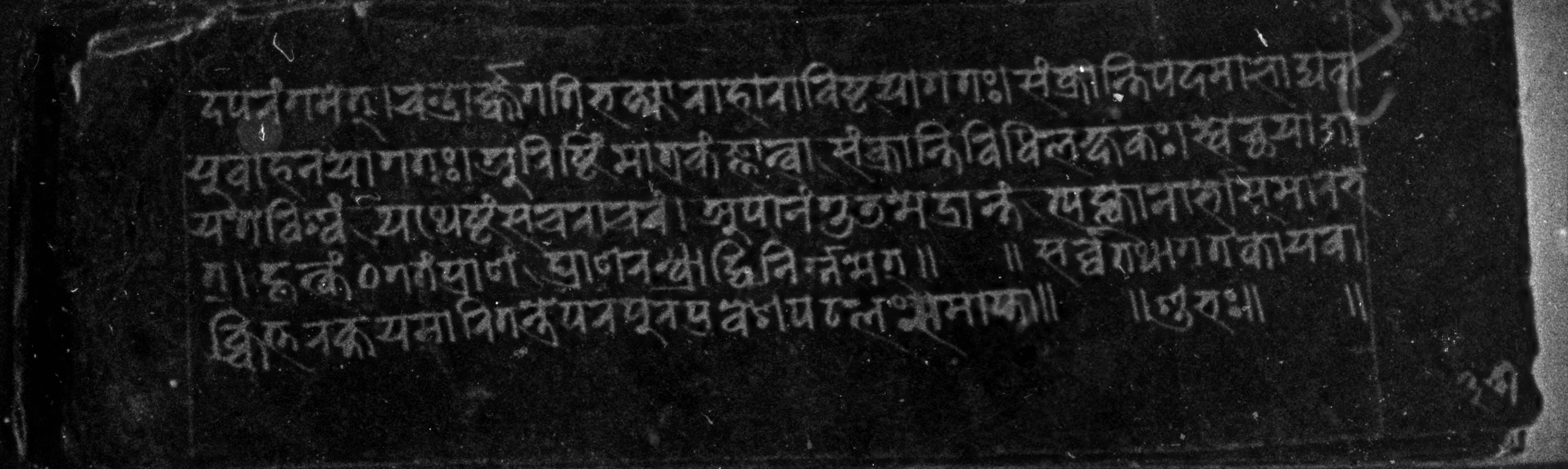

स्नमज्जेश्वरायनमः ॥ ॐ नमः शङ्कराय मृत्युञ्जयाय त्र्यम्बकाय पुष्पादिना
नकानमस्तु ॥ ॐ कुलत्थायपूजनशालापविधमासदा ॥ ॐ धूम्र
संध्रवर्णमिधूम्रलायाःप्रसादनाथनमोविनमोगणवर्ष्यन्नाथा
विणा दमावश्यवृषवक्त्रायहवाःसमन्विताश्रीःकावीसंख्यानं
गाकार्यंलकाविणा मुख्यालिंगस्थानाय नमः ॥ ॐ नमः शान्तमूलाय

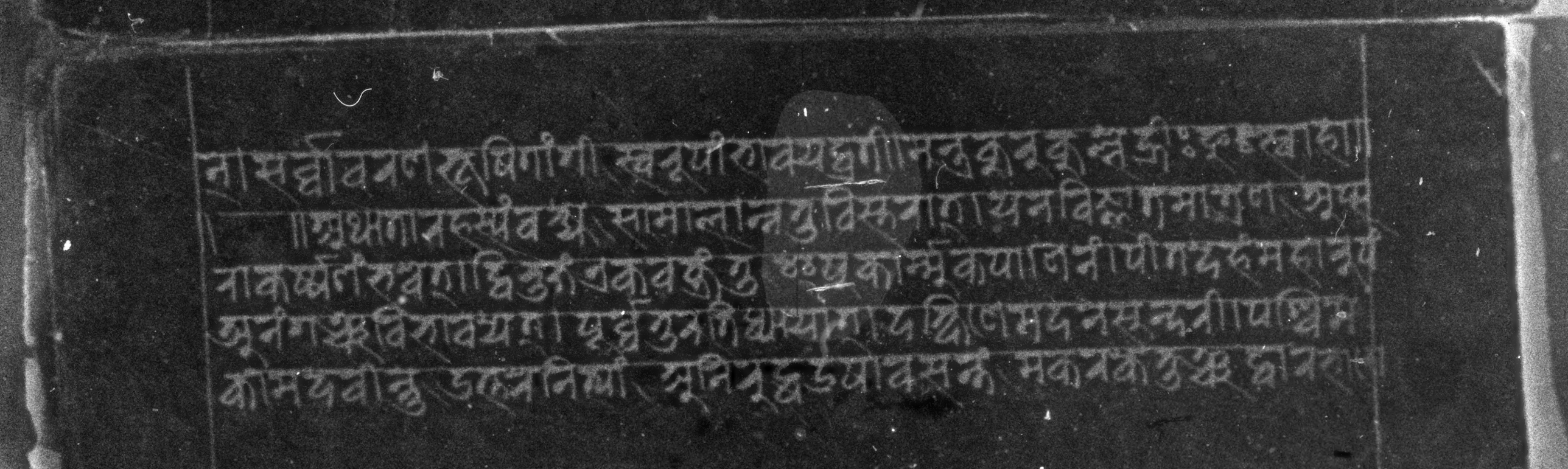

यत्रवा मद्यप्रभाद्युष्ठोपि मस्त्यागस्मव्यग्। अथार्थो नावमन्तव्या
स्वगात्रनलेधयग्। आत्मीयमकोपोद्धर्षं नेवप्रकाशयग्। मि एवि ?
ँ सद्वेसत्वेषु नवेयाश्च कदाचनावाधिचिँनवधयग्। स्वयनधर्म
नश्यग्। अपिनपिगसत्वेषु एच्च नेवप्रकाशयग्। आत्मस्कर्ष
नविनिन्देग्। सगवद्धर्म्म नश्यग्। इमेगीसदाणाश्च धर्म्म

नेवएमान्यएा ग्राह्यस्त्वनयेवश्च समयानीसवनेसदास्नीग्रह्
स्वरावानी हषणाद्वाषनवय॥ रिषी नेवत्रमाधागी यागनेवविव
ईयएा ग्रयन्मद्सदानिएं समयादीनसवयन्नदा पुथाडारगथस
मयएमदाघदिग्रयगा गयावेमछुलेवर्कए सगएस्यादाषस्दृएनाग्री
द्वेएनं समयणालवामएगवं कपाश्चिएं सवानथामविहीनविरं था

सोमं तलिंगपार्श्वे आग्नेयवेद्यां शुक्रं चतुरंगुलमानं तत्
तावद्वेदस्थं वीवागलाग्रमध्यं चतुरंगुलमानवेणं चतुर्द्विजीव
दक्षं विंशदंगुलमूर्द्धं पाणिमादस्य तु मुष्टिनमानवं कार्यं
वृद्धं तत्पार्श्वे मंगलकाष्ठं चतुरस्रं डाक्षास्यं द्वयंगुलं यार्कं नाति
तंगुलखागवं सर्वांगवायच्छं विकान्तिभागभागपत्रास्य प्रमा
णस्य निम्नमेकं पर्वं तदूर्द्धं ॥ ॥ ॥ ॥

तथापन वल्लीपलाशदविधा वल्लिकादिस्त्रीगंनगायनी या
ज्वादिशिवा ऽ४रुणाण वरुणावाहुलिङ्गुणस्त्रऽमाऽवड
मानपत्राशङ्खाऽडल ४रुणाऽ विल्ल मूलतलाऽणिमन्नि ऽमूछ सि
मूर्छ ऽ४रुणाऽ लाऽरुम्मूलुवा ऽवीऽ ऽमूछ सान्नि विछि वा
दिसरुवल्लाऽणिमन्नीयक्षगवकसंवा निवाधि विछ गणाविऽ।

सि २

वनुलानाग विरुनविलिना वंजवत्वस्यं। प्रथमंशावश्यथागमन
योगद्वितीयवं मृगियार्थरतीयद्धु मरुयोगवयुथवी। सर्ववजस
वस्यनिष्यरुयागव्यवरिविवयगागनिषन्दरियादवः अनयाग
प्रयागगन्धनिषत्तिश्च ॥ सर्ववस्य मृगियागविरागविगर्हादिव
चकायविस्तोनं वायवाद्विरुभवव। ह्नन्यवेकयवकाश्च अन्याश्च
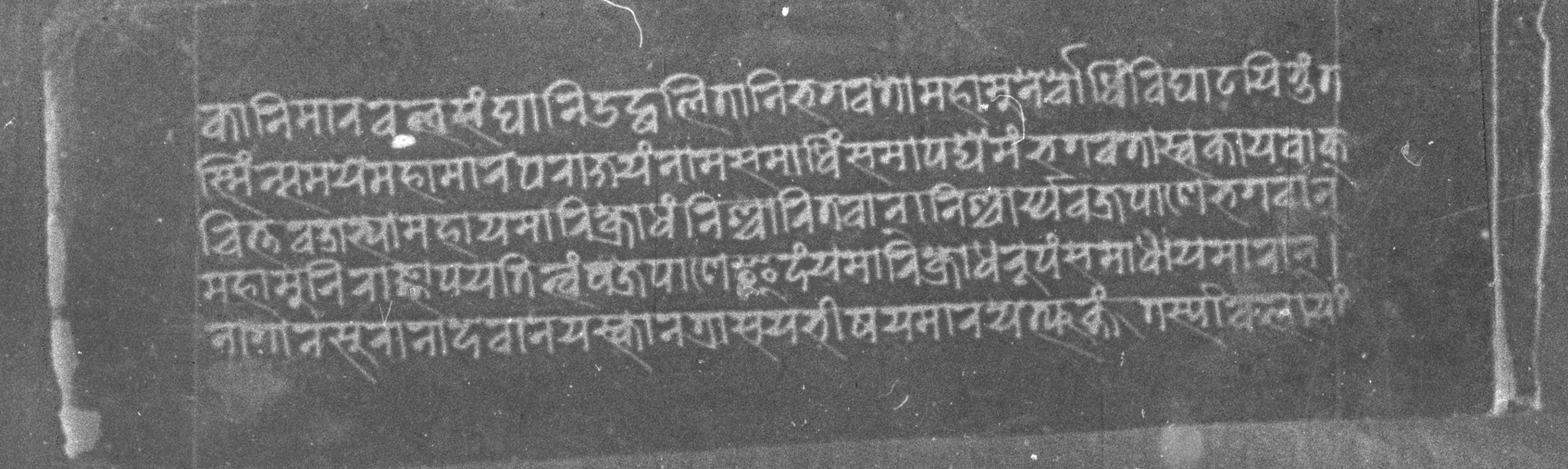
मास्पृशा निर्मलं युद्ध्यप्रमाणन्द पूर्णयवणस्वयंवरकरणविधि
अक्षुण्णसाङ्गवकामरणिष्किदूणावाद्य॥ परमानन्द मूल्यसंस्कार
स्फुरत्सरावधर्म्म सलाव॥ गौरिरा मूलजपूर्णलणाजलङ्काक्षिलदूस
याडा॥ सर्व्वगधगणकायवाङ्किलनलयमानिगन्धवाधिलनिगदनयत्नः॥
॥ अथ कथं प्रवक्ष्यामि रागवन्तश्चमानमहारीमरयानंकानन